

विक्रम संवत्-२०३६, भाद्रपदा सुद्ध-९, गुरुवार, ता. १८-९-१९८०
पयनामृत-३९३, प्रपयन नं. ३७

आज पांचवां धर्म. पांचवा दिन है न? सत्य धर्म. उत्तम सत्य धर्मका पांचवा दिन है.

जिनवयणमेव भासदि, तं पालेदुं असक्कमाणो वि।

ववहारेण वि अलियं, ण वददि जो सच्चवाई सो।।३६८।।

जिनवयनमें जो कहा है, उसे बराबर मानना, ज्ञानना. अपनेसे पल सके नहीं तो उस दोषको दोष ज्ञानना. है न? 'तं पालेदुं असक्कमाणो' आचार आदि पालना अशक्य हो. सेठ नहीं आये हैं? समझमें आया? अपनी शक्ति अनुसार पाले. परंतु अशक्ति हो तो छिपाये नहीं कि हमारा दोष नहीं है. दोषको दोष बराबर ज्ञाने. और दोषको दोष बराबर कहे. शास्त्रमें लेख है, अष्टपालुडमें, कि चरित्त भटा सिजंती, दंसण भटा न सिजंति. चारित्रदोष है, अंदर लगता हो... आये, सेठ आये. चारित्रदोष लगता हो तो वल तो सिजंति. मुक्तिमें जायेगा. क्योंकि ज्यालमें है. वल दोष ज्यालमें है. परंतु दंसण भट्टा-जो श्रद्धासे भ्रष्ट है, वास्तविक वीतरागतत्व, परमात्माने कहे तत्त्वसे विद्ध कुछ भी हो तो वल तो संसारमें रजडेगा. क्या कहा, समझमें आया?

जिनवयनमें कहे 'उसमें जो आचार आदि कहा गया है उसका पालन करनेमें असमर्थ हो...' पालन करनेकी शक्ति न हो तो उसे छिपाये नहीं. सत्यवादी है न. अपना दोष लगा हो उसे छिपाये नहीं. क्योंकि ऐसा सिद्धांत है कि चरित्त भटा सिजंति. अष्टपालुडमें पलवे दर्शनपालुडमें है कि कदाचित् कोई चारित्रभ्रष्ट हो, चारित्रमें दोष हो तो वल तो सिजंति. क्योंकि उसके ज्यालमें है कि वल दोष है. परंतु दंसण भट्टा न सिजंति. आहं...! जो श्रद्धाभ्रष्ट है, श्रद्धाकी मूलमें लूल है, उसकी कभी मुक्ति होगी नहीं. आहं...! समझमें आया?

सिद्धांतमें ऐसा लेख है. दर्शनपालुड, अष्टपालुड, कुंदकुंदाचार्य. चरित्त भटा सिजंति. चारित्रमें दोष लगा हो तो उसे ज्यालमें है तो वल तो छोडकर मुक्ति होगी. परंतु दंसण भटा न सिजंति. परंतु श्रद्धाभ्रष्ट है उसकी मुक्ति कभी नहीं होगी. दंसण

भटा, भटा ज्ञान भटा, चरित्त भटा. दर्शनभ्रष्ट है (अर्थात्) वास्तविक तत्त्वकी स्थितिसे वह तो दर्शनसे भ्रष्ट है, ज्ञानसे भ्रष्ट है, चरित्रसे भ्रष्ट है. ऐसा पाठ है. आलाला..! उसकी तो लोगोंको दरकार नहीं है कि दर्शन क्या (है)? किया पर लक्ष्य. बाहरकी यह किया, बाहरकी वह किया, बाहरकी यह किया. यहां कुंदकुंदाचार्य दर्शनपालुडमें तो यह स्पष्ट बात करते हैं. मुनिव्रत धारण (किया है) और मुनि ऐसा कहे कि चरित्त भटा सिजंति. सम्यग्दर्शन है. अपना अनुभव आत्माका भान है कि मैं शुद्ध चैतन्य हूं, फिर भी पर्यायमें चरित्रका दोष लगता है. विषयकी वासना, क्रोध, मान, लडाईका भाव ऐसा समकित्तीको भी आता है. आलाला..! तो भी जैसे भगवान कुंदकुंदाचार्य कहते हैं, वह दोष है, फिर भी चरित्त भटा सिजंति. क्योंकि उसके ज्यालमें है. ज्ञानमें है कि यह दोष है, वह आदरणीय नहीं है. कर्मके निमित्तकी प्रेरणासे अपनेमें अपने अपराधसे विकार हो गया. ऐसा ज्ञानीको ज्यालमें है. आलाला..! विकार हुआ है फिर भी, चरित्रदोष है फिर भी कुंदकुंदाचार्य दर्शनपालुडमें कहते हैं कि चरित्त भटा सिजंति. वह दोष उसके ज्यालमें है कि मेरेमें यह दोष है, वासना उठी है, ईस प्रकारका राग है. दंसण भटा न सिजंति. आलाला..! सत्य यह है, सत्य धर्म यह है. आलाला..!

जैसा भगवानने कहा उससे कुछ भी किंचित् भी इरेकार, अक अक्षरका भी इरेकार हो तो वह मिथ्यादृष्टि है. आलाला..! विजा है, भाई! अष्टपालुडमें सूत्रपालुड है न? यहां विस्तार किया है. विस्तारसे विजा है और मूल पाठमें है. सिद्धांत जो वीतराग सर्वज्ञ परमात्माने कहा, उसमें अक अक्षर भी मान्यतामें इरेकार है, सत्यसे विद्ध (मान्यता है).. आलाला..! तो वह भ्रष्ट है, श्रद्धासे भ्रष्ट है. परंतु चरित्रभ्रष्टमें अपनेमें ज्यालमें है कि यह दोष है. अपनेमें क्रोध है, थोडा राग आता है, विषयवासना भी समकित्तीको आ जाती है. आलाला..! मालूम है, ज्याल है. शास्त्र कहते हैं कि चरित्त भटा सिजंति. सेठ! उसके ज्यालमें है, उसकी श्रद्धामें है कि मेरेमें चरित्रदोषमें इरेकार हो गया. फिर भी उसकी मुक्ति होगी. क्योंकि उसके ज्यालमें है तो वह छोड देगा. परंतु जिसको श्रद्धाका ज्याल ही नहीं है कि क्या चीज है और अक अक्षर भी विपरीत हो, ऐसा पाठ है. आलाला..! सिद्धांतमें जो कहा.. सूत्रपालुडमें पाठ है. अष्टपालुड है उसमें दूसरा सूत्रपालुड है. उसमें अक अक्षर भी जो भगवानने कहा उसमें इरेकार माने.. आलाला..! तो असत्य माननेवाला श्रद्धासे भ्रष्ट है तो उसकी कभी मुक्ति होगी नहीं. वह सत्य धर्म है. जैसा सत्य है ऐसी श्रद्धा करता है. परंतु चरित्रमें दोष हो तो भी छोडेगा और कर्मशः (मुक्तिमें

जायेगा)।

श्रेष्ठिक राजा. क्षायिक समकित्ती. लज्जारों रानियां. लज्जारों राजा चंवर ढाले. झिर ली समकित्ती (हैं). आलाला..! झिर ली समय-समयमें तीर्थकर गोत्र बांधते हैं. क्या कला? ओलोलो..! जैसे रागमें पडे हैं, स्त्री आदित्तमें विषयमें पडे हैं, झिर ली समय-समयमें क्षायिक समकित्ती आत्मज्ञानी यथार्थ है तो समय-समयमें तीर्थकर गोत्र बांधते हैं. जैसे दोषके कालमें ली तीर्थकर गोत्र बांधते हैं. आलाला..! क्योंकि सत्य ज्यालमें है. सत्यकी यथार्थ प्रतीतिका अनुभव है. तो दोष है वह उसके ज्यालमें है. वह दोष छोडेगा और चारित्र निर्मल करेगा और मोक्ष लोगा. परंतु श्रद्धामें थोडा ली झेरकर लो.. आलाला..! जो भगवानने कला उससे कुछ ली दूसरा माने तो उसको धर्म लोता नहीं, मोक्ष लोता नहीं. यह सत्य धर्म है.

वयनामृत-३८३. ३८३ न? ३८३ है. झिरसे लेते हैं, झिरसे पहलेसे. ३८३. 'जिसे लवलमणसे सयमुच छूटना लो...' ३८३. प्रथम पंक्ति. 'जिसे लवलमणसे सयमुच...' सयमुच, लं! जैसे कले कि लमें लवलमण नहीं करना है और लमें 'जन्म-मरणसे (छूटना है), जैसा तो बोले. उसमें कथनमें क्या? 'लवलमणसे सयमुच छूटना लो...' यथार्थपने उसे लव लेना ली नहीं है, लव करना ली नहीं है. जैसी अंतर दृष्टिमें जिसकी दृष्टि है, 'उसे अपनेको परद्रव्यसे भिन्न...' आलाला..! शरीर, वाणी, कर्मसे तो भिन्न, स्त्री, कुटुंब, परिवार, लक्ष्मी, ईश्वर, मकान, व्यापार-धंधेसे समकित्ती तो भिन्न है. आलाला..! व्यापार लोता है परंतु अंदरमें स्वामीपना नहीं लोता. अज्ञानीको तो स्वामीपना लोता है. लम करते हैं, लम करते हैं, लमारा है. लमारा आचरण है, लमारा धंधा है, लमारा व्यापार है. लम व्यवस्थापक, लम बराबर व्यवस्था करते हैं. वह मिथ्यादृष्टि अज्ञानी है. वह जैन नहीं. उसे जैनकी श्रद्धा नहीं है. आलाला..! जैसी बात है.

वह कहते हैं कि 'अपनेको परद्रव्यसे...' परद्रव्यमें तो स्त्री, कुटुंब, परिवार, लक्ष्मी.. अरे..! देव, गुरु और शास्त्र ली परद्रव्यमें आये. 'परद्रव्यसे भिन्न पदार्थ निश्चित करके...' परपदार्थसे मैं बिलकुल भिन्न हूं. मेरेमें राग, शरीर, कुटुंब, धंधा, व्यापार, पैसाका कोई संबंध नहीं है. वह चीज बिलकुल भिन्न है, मैं बिलकुल भिन्न हूं. जैसा निश्चित करके 'अपने ध्रुव ज्ञायकस्वभावकी महिमा लाकर,...' आलाला..! बहुल अर्थी बात है. 'अपने ध्रुव ज्ञायकस्वभावकी महिमा लाकर...' पर्याय है. परंतु वह पर्याय ध्रुवका निर्णय करती है. आलाला..! ध्रुव ज्ञायकस्वभावकी महिमा. महिमा करनेवाली पर्याय है. महिमा करना है ध्रुवका. आलाला..! क्या? त्रिकावी ज्ञायकस्वभूषण भगवान

चैतन्यमूर्ति आनंदकंद प्रभु, उसका श्रद्धान करना है, उसकी महिमा वाकर. महिमा करता है पर्यायमें, महिमा करता है पर्याय-अवस्थामें परंतु महिमा करता है ध्रुवकी. आलाहा..! सम्यग्दर्शन प्रगट होता है. तब उसको सम्यग्दर्शन प्रगट (होता है). अभी तो धर्मकी प्रथम सीढी. आलाहा..! है न? 'सम्यग्दर्शन प्रगट करनेका प्रयास करना चाहिये.' आलाहा..!

'यदि ध्रुव ज्ञायकभूमिका आश्रय न हो...' आलाहा..! मुद्देका भाव है. यदि ध्रुव त्रिकावी भगवान नित्यानंद अतीन्द्रिय आनंदका कंद प्रभु, उसका ज्ञायकभूमिका आश्रय न हो, उसका जिसको आवंजन नहीं, अंतरका आश्रय नहीं, त्रिकावी ज्ञायकभाव भगवान आत्मा, उसका जिसको अवलंजन नहीं-आश्रय नहीं, उस ओर जुकना नहीं है, समीपता नहीं है, आलाहा..! वह 'जुव साधनाका बल...' वह जुव साधनाका साधन, मोक्षका साधन, वह 'साधनका बल किसके आश्रयसे प्रगट करेगा?' आलाहा..!

मुमुक्षु :- अनुभवकी बात है.

उत्तर :- मुद्देकी रकम है. आलाहा..! बलिन बोले थे. आलाहा..!

क्या कहते हैं? अपना ध्रुव त्रिकावी स्वभाव वर्तमान पर्याय है. वह पर्याय त्रिकावका निर्णय करती है, अनुभव करती है. त्रिकावी जो ध्रुव स्वभाव, उसका पर्याय निर्णय करती है. और 'यदि ध्रुव ज्ञायकभूमिका आश्रय न हो...' ऐसा त्रिकावी भगवान आत्मा ध्रुव ज्ञायक स्वरूप, उसका आश्रय न हो तो जुव साधनाका बल-धर्मका साधनाका बल, मोक्षमार्गका साधनाका बल किसके आश्रयसे प्रगट करेगा? आलाहा..! समझमें आया? मुद्देकी रकम है. दरकार कहां दुनियाको पडी है. अरेरे..! अनंत-अनंत भव कर-करके मर गया. और अभी जिसको अनंत भव करने हैं,... भवभ्रमणसे सयमुच छूटनेका भाव हो, उसकी बात है. आलाहा..!

यहां कहते हैं, अंतरमें ध्रुव स्वरूप भगवान, उसका ज्ञायकभूमिका आश्रय न हो.. आलाहा..! नित्यानंद प्रभुका अवलंजन न हो, नित्य ध्रुव स्वरूपका आधार-आश्रय-अवलंजन.. आलाहा..! न हो तो जुव साधनका बल, अपने मोक्षमार्गका साधनाका बल किसके आश्रयसे प्रगट करेगा? प्रगट तो जो ध्रुव है उसको दृष्टिमें लेगा तो मोक्षमार्ग प्रगट होगा. ध्रुव लक्ष्यमें लेकर प्रगट मोक्षमार्ग होगा. पर्याय, राग, दया, दान लक्ष्यमें रहेगा तो संसार रणडनेमें है. आलाहा..! मुद्देकी रकम है. आलाहा..! क्या कला?

अपनी चीज जो त्रिकावी ध्रुव है, उसका यदि आश्रय न हो तो जुव मोक्षमार्गका साधन किसके आश्रयसे करेगा? आलाहा..! है? 'बल किसके आश्रयसे प्रगट करेगा?'

क्या? साधनाका बल. बहुत संक्षेपमें शब्द हैं. साधनाका बलका अर्थ-स्वरूप शुद्ध चैतन्य ज्ञायक, उसकी दृष्टि करके पर्यायमें जो बल उत्पन्न हुआ-मोक्षका मार्ग, तो यहि ध्रुवका आश्रय है नहीं, ध्रुवका अवलंबन है नहीं वह किसके आश्रयसे साधनाका बल, मोक्षमार्गर्षी साधन. मोक्षमार्गका साधन किसके आश्रयसे करेगा? किसके आश्रयसे प्रगट मोक्षमार्ग करेगा? आलाहा..! जैसी बात. पूरी दुनिया रज्जुनेमें पडी है. अरेरे..!

यहां तो कहते हैं, अंदर भगवान ध्रुव.. आलाहा..! नित्यानंद प्रभुकी दृष्टि प्रगट करके समकित प्रगट करना. यहि जैसे ध्रुव ज्ञायकभावका आश्रय न हो तो आत्मा साधनाका बल, मोक्षमार्गका साधनाका बल किसके आश्रयसे प्रगट करेगा? किसके अवलंबनसे प्रगट करेगा? किसके आधारसे पर्यायमें उत्पन्न होगा? आलाहा..! लोगोंने दरकार करी नहीं. जहां-तहां मिला उसमें (धुस गये). उसमें पैसे दो, पांच, दस कोड मिले.. मर गया, वहीं अटक गया. आलाहा..! और ईश्वर-कीर्ति धूल.. धूल. आलाहा..!

क्या कहते हैं? बहुत ही संक्षिप्त शब्दोंमें (कहते हैं), आत्मा सयमुच्य भवत्प्रमाणसे रहित होनेका भाव हो तो ओक त्रिकावी ध्रुवका अवलंबन लकर सम्यग्दर्शन प्रगट करना. और उस ध्रुव ज्ञायकभावके आश्रय बिना मोक्षमार्गका बल, सम्यग्दर्शन-ज्ञानका बल है वह किसके आश्रयसे प्रगट करेगा? ध्रुवके अवलंबन बिना किसके आश्रयसे प्रगट करेगा? सेठ! भाषा संक्षेपमें है, परंतु भाव है. आलाहा..! प्रभु! तेरी अंदर प्रभुता पूर्ण पडी है. ओक समयकी पर्याय उस प्रभुताका आश्रय न ले.. आलाहा..! ओक समयकी वर्तमान दशा त्रिकाल ज्ञायकस्वभावका आश्रय न ले, प्रभु! किसके आश्रयसे वह साधनका बल प्रगट होगा? ध्रुवके आश्रय बिना तो साधनका बल प्रगट होगा नहीं. आलाहा..! समजनेमें, सुननेमें कठिन लगे. आलाहा..! समजमें आया?

पर्याय और राग-द्वेषके आश्रयसे तो धर्म होता नहीं. शरीरके आश्रयसे तो होता नहीं, ये तो परद्रव्य है. वह तो पहले कला. कला न? 'अपनेको परद्रव्यसे भिन्न पदार्थ निश्चित करके,...' यह पहले कला. आलाहा..! स्त्री, कुटुंब-परिवार, लक्ष्मी, शरीर-मिट्टी-धूल, वाणी सब परद्रव्य है. 'परद्रव्यसे भिन्न पदार्थ निश्चित करके,...' दूसरी पंक्ति है न? 'अपने ध्रुव ज्ञायकस्वभावकी महिमा लाकर,...' आलाहा..! अपना नित्यानंद प्रभु ज्ञायकभाव उसकी महिमा लाकर 'सम्यग्दर्शन प्रगट करनेका प्रयास करना चाहिये.' आलाहा..! मुद्देकी रकम है. आज सत्य धर्मका दिन है. पांचवा दिन. पांचवा है न आज? सत्य धर्म. आलाहा..!

कहते हैं कि सत्य धर्म सत्य ध्रुवके अवलंबन बिना किसके अवलंबनसे प्रगट

करेगा? पर्यायमें सत्य धर्म-सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र मोक्षका मार्ग शुद्ध ध्रुव ज्ञायकभावके अवलंबन बिना किसके आश्रयसे साधनका बल प्रगट करेगा? आलाला..! भाषा बहुत संक्षेमें है, भाव बहुत गंभीर है. आला..! ईसको पढकर तो अन्यमति वैष्णव लोग पढकर.. आलाला..! कल द्योपहरको ऐसा सपना आ गया कि अक साधु आया और अक आदमी आया. तो साधु ऐसा बोला कि यह वचनामृत क्या चीज है! आलाला..! सपनेमें. कल द्योपहरको थोड़ी जबकी आ गयी. कल द्योपहरको. वह साधु ऐसा बोला, गोपनाथमें बोला न? तो वह अंदरसे आ गया. यह वचनामृत क्या है! आला..!

यहां कहते हैं, प्रभु! तुझे भवभ्रमणसे सयमुच छूटनेका भाव हो, भवभ्रमणसे छूटनेका सयमुच भाव हो तो ज्ञायकस्वभाव ऐसा त्रिकाली ध्रुव, उसके अवलंबनसे सम्यग्दर्शन प्रगट होगा. आलाला..! और उसके अवलंबन बिना, प्रभु! अनंतका नाथ प्रभु अंदर ध्रुव, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतआनंद सर्वांग अतीन्द्रिय आनंदसे भरा पडा प्रभु, उसका अवलंबन बिना किसके बलसे तू मोक्षके मार्गका साधन करेगा? आलाला..! यह बड़ी बात है, छोटाभाई! आलाला..! प्रभु! तू छोटा नहीं है, नाथ! बडा है प्रभु अंदर. आलाला..! अरे..! तू उस बडेका आश्रय न ले, अरे..! अकाल पडता है न? अकाल. तो बडेका आश्रय लिये बिना गरीब आदमी बारह महिने निर्वाह कैसे करेगा? पाठ है न शास्त्रमें. अकाल पडता है न? अकाल. पैसा नहीं, कमाई नहीं, इसल नहीं (होती). तो बडे गृहस्थका आश्रय बिना बारह महिनेका निर्वाह कैसे करेगा? आलाला..! जैसे बडा ध्रुव भगवान आत्मा, तेरी पर्यायमें अकाल पडा है, प्रभु! आलाला..! अरे..! तुझे तेरी जबर नहीं है, प्रभु! तेरी पर्यायमें अकाल है. आलाला..! उस अकालका नाश करनेका और सम्यग्दर्शन आदि मोक्षमार्ग प्रगट करनेका सुकाल ध्रुवका आश्रय बिना किसके आश्रयसे करेगा? आलाला..! है तो पर्याय (आश्रय) करती है. क्या कहते हैं? अवलंबन तो पर्याय करती है. ध्रुव अवलंबन नहीं लेता. ध्रुव तो ध्रुव है, कायम है. आलाला..! अरे..! पर्याय क्या और ध्रुव क्या? पर्याय बिनाका द्रव्य तो कभी तीन कालमें अक समय होता नहीं. आलाला..! वह तो कल आ गया-सामान्य विशेष स्वरूप. विशेष बिना तो सामान्य त्रिकाल द्रव्य कभी होता नहीं. कभी होगा नहीं. विशेष जो पर्याय है.. आलाला..! वह यदि ध्रुव द्रव्यका अवलंबन न ले तो किसके आश्रयसे तुझे धर्मका बल प्रगट होगा? धर्मका बल तो ध्रुवके आश्रयसे ही प्रगट होगा. आलाला..!

मुमुक्षु :- गुरुके उपदेशसे नहीं?

उत्तर :- उपदेश अनंत बार सुना. शास्त्र भी अनंत बार पढा. शास्त्रके अनंत

बार पैर छूओ, जय भगवान, जय भगवान! सब राग है. अरे..! साक्षात् तीन लोके नाथ तीर्थकरदेव समवसरणमें विराजते हैं. वहां ईन्द्र आते हैं. वहां तू अनंत बार गया था. अनंत बार सुना है. परंतु ध्रुवके अवलंबन बिना प्रगट होगा कहांसे? आलाहा..! परके आवलंबनसे तो प्रगट नहीं होगा. वर तो पहले कहा न? 'अपनेको परद्रव्यसे भिन्न पदार्थ निश्चित करके,...' आलाहा..! 'अपने ध्रुव ज्ञायकस्वभावकी महिमा वाकर, सम्यग्दर्शन प्रगट करनेका प्रयास करना चाहिये.' यह प्रयास करना चाहिये. आलाहा..! मूल वस्तुको छोडकर.. मूलं नास्ति कुतो शाभा. मूल ही नहीं है वहां फिर इल, कूल कहांसे आयेगा? आलाहा..!

यहां वर कहते हैं, इस शब्दमें तो बहुत पडा है. 'यदि ध्रुव ज्ञायकभूमिका...' ध्रुव ज्ञायकभूमि-नित्य ज्ञायकभूमि-त्रिकावी जिसकी सत्ता है. ऐसी सत्ताका आश्रय न हो.. आलाहा..! त्रिकावी भगवानका आश्रय न हो तो 'शुव साधनाका बल...' मोक्षकी साधनाका बल, धर्मकी साधनाका बल, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र 'किसके आश्रयसे प्रगट करेगा?' आलाहा..! जैसे ही पढ ले तो (समजमें आये ऐसा नहीं है). उसमें माल भरा है. अन्यमति भी अेक बार पढकर ऐसा हो जाये.. आलाहा..! क्या है यह चीज! जैनमें किसीको मालूम नहीं, पढे तो कुछ मालूम पडे नहीं. व्यर्थ.

यहां तो ऐसा कहते हैं, प्रभु! अेक बार सुन! तेरी चीजमें दो चीज है. अेक ध्रुव है, अेक पर्याय है. वर्तमान अवस्था और अेक त्रिकावी ध्रुव है. अब, यदि तुझे सयमुच्य भवसे रलित होना हो तो पर्यायमें ध्रुवके अवलंबन बिना सम्यग्दर्शन प्रगट होगा नहीं. धर्मकी पहली सीढी.. आलाहा..! धर्मकी पहली भूमिका पर्यायमें-अवस्थामें ध्रुवके अवलंबन बिना किसके बलसे तू मोक्षमार्ग प्रगट करेगा? मोक्षमार्ग प्रगट करनेमें तो ध्रुवका अवलंबन है. आलाहा..! 'थोडुं लज्युं धणुं करीने ज्ञाणो.' आलाहा..!

'ज्ञायककी ध्रुव भूमिमें...' दूसरा शब्द. ज्ञायक भगवान अंदर चैतन्यमूर्ति प्रभु सख्यिदानंद अनादिअनंत, जैसे 'ज्ञायककी ध्रुव भूमिमें..' ध्रुव भूमि-ध्रुव स्थल-ध्रुव धाम. ध्रुवधाममें 'दृष्टि जमने पर,...' आलाहा..! ध्रुव भूमिमें दृष्टि जमने पर. आलाहा..! 'उसमें अेकाग्रताइप प्रयत्न करते-करते...' 'उसमें अेकाग्रताइप प्रयत्न करते-करते निर्मलता प्रगट होती जाती है.' दूसरा कोई उपाय है नहीं कि ईतनी लक्ष्मीका भर्ष किया और ईतने मंदिर बनाये और ईतनी दया पावी, भगवानकी ईतनी माला गिनी. सब संसार (है). राग है, सब विकल्प है. आलाहा..! अरे..! यहां तो पुस्तक प्रकाशित हो गया है. करीब ८०००० तो प्रकाशित हो गये हैं.

यह बात कोई भी मध्यस्थ छोड़कर पढ़े तो उसे मालूम पड़े कि मार्ग तो यह है. आलाहा..!

‘ज्ञायककी...’ ज्ञायक यानी ज्ञाननेवाला-ज्ञानन स्वभाव. भगवान आत्मा ज्ञायक स्वभाव है. सब परवस्तु, राग भी पर, दया, दानका भाव, भक्तिका भाव भी पर (है). अंक ‘ज्ञायककी ध्रुवभूमिमें दृष्टि जमाने पर, उसमें अकाग्रतारूप प्रयत्न करते-करते...’ आलाहा..! ज्ञायकभावमें अकाग्रता करते-करते ‘निर्मलता प्रगट होती जाती है.’ आलाहा..! थोड़ी कठिन सूक्ष्म बात है, प्रभु! परंतु मार्ग यह है. दृष्टियाने ... दिया है, बेचारेको मार दिया है. यह करो, वह करो, यह करो, वह करो... तुम्हारा कल्याण हो जायेगा. मार डाला है. शास्त्रमें लेख है. मरणतुल्य कर दिया है. उसमें है, यह शास्त्र है. कौन-सी गाथा है? २८ है. आलाहा..! अमृतचंद्राचार्यका श्लोक है. आलाहा..! भगवान आत्मा कर्मसंयोगसे ढका होनेसे राग और द्वेष, पुण्य और पापके भावके अस्तित्वमें रमणता करनेसे, तू वहां रहनेसे मरणको प्राप्त हो रहा है. मरणको प्राप्त हो गया है. मानो जव है ही नहीं. ये राग ही मैं हूं और यही मैं हूं. आलाहा..! पुण्य और पाप, और उसका इव वही मैं हूं. ऐसा करके.. आलाहा..! मरणको प्राप्त हो रहा है. भगवान आत्मा तो मरण-मानो कोई है ही नहीं. मलाप्रभु है वह तो कुछ है ही नहीं. और इस धूलमें राग, पुण्य और पापके इवमें अपना मरण कर दिया. तू नहीं है. आलाहा..! ऐसी बात कहां सुनने मिले? अथवा सेठ लोगोंको मकान लगाये तो पैसे भर्य करे. इसलिये मानो आलाहा..! पैसा भर्य करे तो लाभ हुआ. धूल भी नहीं है. क्यों, कपूरचंद्रभाई! वह सब सेठ है. आलाहा..! कहीं पांच-पचीस हजार भर्य करे और ऐसा कुछ बनाये-जवदया मंडल, उसके अग्रेसर हो. जवदया मंडलका अग्रेसर, पचास-सौ लोगोंका. हर जगह काम वे तो बहुत काम किया. प्रभु कहते हैं, प्रभु! सुन तो सही, नाथ! तेरी रागकी कियाका अस्तित्वमें तेरा अस्तित्व (मानकर) तूने तेरा मरण किया है. आलाहा..! तेरी लयाती-सत्ता पुण्य और पापकी सत्ताके उद्घासमें... आलाहा..! शुभ और अशुभभाव और उसका इव जो धूल-लक्ष्मी आदि, उसके उमंगमें तेरी चीजका तूने अनादर कर दिया. आलाहा..! तेरी चीजका मरण कर दिया. आलाहा..!

वह भ्रांति परमगुरु श्री तीर्थकरका उपदेश.. आलाहा..! तीन लोकके नाथका उपदेश सुनने पर प्रगट होता है. धर्म तब प्रगट होगा. कलशटीका है. कलश है न? अमृतचंद्राचार्य मुनि भावविंगी संत हैं. अमृतके घरमें चले गये हैं. अमृतका.. आलाहा..! भजना! उसमें घुस गये हैं. वे बात करते हैं. प्रभु! तेरी लयाती तो बड़ी अंदर

है. परंतु तूने अभी तक तो ऐसा किया कि उसमें जो है नहीं, ऐसा पुण्य-पापका भाव शुभ-अशुभ और उसके इलमें तू कृतकृत्य हो गया, तुझे संतोष हो गया, तेरे आत्माका तूने मरणा कर दिया, मानो कोई चीज है ही नहीं. आलाला..! इस चीजके आगे कोई चीज है नहीं. यहीं कहते हैं कि इस चीजके आगे दूसरी कोई चीज नहीं है. आलाला..!

‘साधकजिवकी दृष्टि निरंतर शुद्धात्मद्रव्य पर होती है,...’ है? साधकजिवकी-धर्मकी दृष्टि.. आलाला..! जिसको मोक्षका मार्ग साधना है, जैसे धर्मकी दृष्टि ‘निरंतर शुद्धात्मद्रव्य पर होती है,...’ आलाला..! दृष्टिमें तो शुद्धात्मद्रव्य पर ही विराजता है, दृष्टिमें उसका ही आदर है. आलाला..!

मुमुक्षु :- ध्रुवका आश्रय.

उत्तर :- ध्रुव त्रिकावी भगवानका ही अवलंबन है, बस. आलाला..! वही पूरे आत्माका जिवन जैसा है वैसा माननेका सम्यग्दर्शन प्रगट होगा. आलाला..! अरेरे..!

‘साधकजिवकी दृष्टि निरंतर शुद्धात्मद्रव्य पर होती है, तथापि साधक ज्ञानता है सबको;...’ अब क्या कहते हैं? दृष्टि द्रव्य पर-ज्ञायक पर निरंतर है, फिर भी वह ‘शुद्ध-अशुद्ध पर्यायोंको ज्ञानता है...’ ज्ञाने सबको. शुद्ध पर्याय धर्मकी प्रगट हुयी उसको भी ज्ञाने. और अशुद्ध पर्याय होती है-शुभाशुभ भाव राग.. आलाला..! है अशुद्ध. अशुद्ध शुभाशुभ राग. और शुद्ध वह मोक्षका मार्ग, शुद्ध पर्याय. त्रिकावके अवलंबनसे प्रगट हुयी शुद्ध पर्याय. उसको भी ज्ञान ज्ञाने-पर्यायको, भले वह दृष्टिका विषय नहीं है, दृष्टिका विषय ध्रुव है, परंतु साथमें जो ज्ञान उत्पन्न हुआ वह अपनी वर्तमान शुद्ध पर्यायको भी ज्ञानता है और वर्तमान अशुद्ध पर्यायको भी ज्ञानता है. आलाला..! अशुद्धपर्याय भी धर्मको होती है. आलाला..! अशुद्धका दो प्रकार-शुभ और अशुभ. शुभभाव-दया, दान, भक्ति, व्रत, तप आदि. यह शुभ है वह अशुद्ध है. और हिंसा, बूठ, चोरी, विषयभोग वासना वह अशुभ भी अशुद्ध. अशुभ और शुभ दोनों अशुद्ध है. आलाला..!

दृष्टि तो निरंतर शुद्धात्मद्रव्य पर होती है. धर्मकी दृष्टि तो त्रिकावी ज्ञायक स्वभाव पर दृष्टि रहती है. ‘तथापि साधक ज्ञानता है...’ धर्म ज्ञानता है. भले गृहस्थाश्रममें हो, ‘वह शुद्ध-अशुद्ध पर्यायोंको ज्ञानता है...’ शुद्धको भी ज्ञानता है और अशुद्ध आ गयी (उसे भी ज्ञानता है). आता है, विषयवासना, स्त्री भोग.. आलाला..! अरेरे..! लडाईका भाव आया. भरत और बाहुबली. दो भाई समकित्ती ज्ञानी लडाईमें आ गये. ज्ञानते हैं कि यह पर्याय आ गयी है, वह मेरी नहीं है, परंतु मेरी

कमजोरीसे आ गयी है. आलाला..!

‘और उन्हें जानते हुआ उनके स्वभाव-विभावपनेका,...’ जो आत्माके अवलंबनसे निर्मल सम्यग्दर्शन हो, वह स्वभाव है और पुण्य-पापका भाव है वह विभाव है. आलाला..! धर्मीजिव समकित्ती धर्मकी पहली सीढीवाला ध्रुवके अवलंबनसे जो सम्यग्दर्शन प्रगट हुआ, उसके साथ ज्ञान हुआ वह शुद्ध-अशुद्ध पर्यायको ज्ञानता है. ‘जानते हुआ उनके स्वभाव-विभावपनेका,...’ आलाला..! ‘सुभ-दुःखरूप वेदनका,...’ साधकको आत्माका सुभ थोडा है और कल्पनाका शुभभावमें सुभ अस्थिरताका आ जाता है और अशुभमें दुःख है. शुभमें भी दुःख है और अशुभमें भी दुःख है. आलाला..! और सुभ अपनेमें आत्माके आश्रयसे (है). जो सुभ अपना त्रिकाली ज्ञायकभाव भगवंतस्वरूप, उसके अवलंबनसे जो दशा प्रगट हुयी, वह सुभ है, वह आनंद है. बाकी सब दुःख है. पुण्य और पापका यादें जैसे भाव (हो), सब दुःख है. उस ‘सुभ-दुःखरूप वेदनका...’ आला..! उसका विवेक है, जैसे कहते हैं. समकित्तीको उसका विवेक है. आलाला..! अपने स्वरूपका भी भान है और जैसे विकारादि है उसका भी भान है. आलाला..! ‘सुभ-दुःखरूप वेदनका...’ देओ! यहां तो दुःखरूप वेदन आत्मा करता है, समकित्ती!

मुमुक्षु :- साधकपना है वह बाधकपना होता है.

उत्तर :- है, साधक है. अभी पूर्ण आनंद नहीं है. पूर्ण दुःख मिथ्यादृष्टिमें, पूर्ण आनंद केवलीमें और साधकमें थोडा आनंद और थोडा दुःख, दोनों हैं. आलाला..!

‘उनके साधक-बाधकपनेका ईत्यादिका विवेक वर्तता है.’ आलाला..! अंतरमें धर्मीको साधककी धर्मकी पर्याय आत्माके अवलंबनसे जो उत्पन्न हुयी हो और बाधकपर्याय पुण्य-पापका भाव, सुभ-दुःखका वेदन.. आलाला..! ‘ईत्यादिका विवेक वर्तता है.’ ज्ञानमें वह सब ज्ञाननेमें आता है. दृष्टिमें अकेला ध्रुव है. सम्यग्दर्शनमें-धर्मकी प्रथम सीढीमें तो दृष्टि तो ध्रुव पर है. आलाला..! ध्रुव परसे दृष्टि कभी हटती नहीं. और साथमें जो ज्ञान है वह ज्ञान सबको ज्ञानता है. सबका विवेक करता है. है? दुःखको दुःख ज्ञानता है, सुभको सुभ ज्ञानता है, विकारको विकार ज्ञानता है, अविकारको अविकार ज्ञानता है. आलाला..! धर्मीका सख्या दर्शनपूर्वक जो ज्ञान हुआ, वह ज्ञान दुःखको दुःखरूप ज्ञानता है, रागको रागरूप ज्ञानता है, सुभको सुभरूप ज्ञानता है. सुभ यानी अपने आत्माका सुभ, हां! दुनियामें सुभ कहीं नहीं है. वह सब दुःखी प्राणी है. आलाला..! ‘ईत्यादिका विवेक वर्तता है.’

‘साधकदशामें साधकके योग्य अनेक परिणाम वर्तते रहते हैं...’ साधकदशा धर्मीकी-

समकित्तीकी है, आलाहा..! वल 'साधकके योज्य...' साधकके योज्य-लायक 'अनेक परिणाम वर्तते रहते हैं परंतु 'मैं परिपूर्ण हूं' ऐसा बल सतत साथ ही साथ रहता है.' आलाहा..! क्या कहते हैं? साधकदशा धर्मीकी दशामें समकित्तीको 'साधकके योज्य अनेक परिणाम वर्तते हैं, वर्तते रहते हैं. परंतु मैं परिपूर्ण हूं, ऐसा बल सतत साथ ही साथ रहता है.' मैं वस्तु तो परिपूर्ण हूं. आलाहा..! ध्रुव, ज्ञानते हैं पर्यायमें, समजमें आया? ध्रुव ज्ञानता नहीं. ज्ञानते हैं पर्यायमें, परंतु पर्यायमें ज्ञानते हैं किसको? ध्रुवको. नित्य रहनेवाली चीजको पर्याय ज्ञानती है. आलाहा..! 'साधकदशामें साधकके योज्य अनेक परिणाम वर्तते हैं, वर्तते रहते हैं. परंतु मैं परिपूर्ण हूं, ऐसा बल सतत साथ ही साथ रहता है.'

'पुरुषार्थरूप किया अपनी पर्यायमें होती है...' आलाहा..! क्या कहते हैं? अपने शुद्ध ध्रुव स्वरूपकी ओर जो पुरुषार्थ आया वल पर्याय है. वल ध्रुव नहीं है. ध्रुव परसे जो पुरुषार्थ उत्पन्न हुआ वल तो पर्याय है. आलाहा..! है? 'पुरुषार्थरूप किया अपनी पर्यायमें होती है...' आलाहा..! त्रिकावी ज्ञायक स्वरूप भगवान आत्मा परिपूर्ण परमात्मस्वरूप.. आलाहा..! अप्पा सो परमप्पा, ऐसा तारणस्वामीमें आता है. अप्पा सो परमप्पा-आत्मा परमात्मा ही है. आलाहा..! कहां किसको पडी है. आलाहा..!

यहां कहते हैं, 'पुरुषार्थरूप किया अपनी पर्यायमें होती है...' स्वभावसन्मुखका पुरुषार्थ त्रिकावी ध्रुव ओरका पुरुषार्थ, वल किया पर्यायमें होती है. ध्रुवमें नहीं होती. आलाहा..! क्या कहा? अरेरे..! पुरुषार्थ जो त्रिकावीका श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र, वल पर्यायमें होता है. ध्रुव तो त्रिकावी अकरूप है. उसकी श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र वल पर्यायमें होता है. आलाहा..! और पर्याय बिनाका कभी अकेला सामान्य होता नहीं. ऐसा हो तो मोक्षमार्ग बिना अकेला आत्मा रह जाय. आलाहा..! समजमें आया? ऐसा उपदेश. जैसे पर्युषण, उसमें ऐसा उपदेश. बाहरकी बातें, यल करना, उपवास करना, आठ दिन-दस दिनके बिना पानीके करो. ऐसा दसवक्ताणी पर्वका उत्सव करो, महोत्सव करो. आलाहा..! अरे..! प्रभु! उसमें क्या है? उसमें रागकी मंदता हो तो कदाचित् पुण्य बंधेगा. बाकी आत्माको कुछ लाभ बिलकुल नहीं है, नुकसान है. आलाहा..!

ऐसा सतत साथ ही साथ रहता है. 'पुरुषार्थरूप किया...' ये क्या कहते हैं? आत्मा जो ध्रुव है, उसमें पुरुषार्थसे जो प्रगट सम्यग्दर्शन होता है तो वल पुरुषार्थ पर्यायमें है, त्रिकावमें नहीं. त्रिकाव तो अकरूप है. ध्रुव तो त्रिकाव अकरूप है. पुरुषार्थ

हुआ है वह तो पर्यायमें हुआ है. आलाला..! अरेरे..! ऐसी बात सुनने भिसे नहीं और मनुष्यत्व पशुकी भांति यवा जाता है. पशु और मनुष्यमें कोई अंतर नहीं है. वह आगे कहेंगे. दोपहरको आयेगा. जो अंकांत मानता है, द्रव्य ही मानता है, पर्यायको नहीं मानता है, वह पशु है. पशु नाम बध्यति एति पशु. संसारसे मिथ्यात्वसे बंधता है. आलाला..! और पर्यायको मानता है और ध्रुवको नहीं मानते हैं, वे भी पशु हैं. आलाला..! वह भी पशुतुल्य अंकांतमें, जैसे पशुको मात्र घास खानेकी आदत है, घासके अंदर लड्डु डालो तो भी वह घासके साथ लड्डु खाता है. लड्डुको अलग नहीं खाता. जैसे पशुकी भांति आत्मा, तिर्य्यकी भांति राग और पुण्यको अपना आत्माके साथ मिलाकर भोगता है. आलाला..! अरे..! कौन कहे? त्रिलोकनाथ सर्वज्ञदेव परमेश्वर ईन्द्रोके समक्ष यह बात करते हैं. अभी भी यहां परमेश्वर विराजते हैं. बाघ और सिंह, और रीछ जंगलमेंसे सुनने यवे आते हैं. यह बात सुननेको. साधारण बात और कथा तो घर-घरमें है. आलाला..!

यहां कहते हैं कि 'पुरुषार्थकी क्रिया अपनी पर्यायमें होती है और साधक उसे जानता है,...' वीर्यको जानता है. बस! लो गया? 'तथापि दृष्टिके विषयभूत ऐसा जो निष्क्रिय द्रव्य...' जो द्रव्य है न? वह निष्क्रिय है-परिणाम बिनाका. 'वह अधिकका अधिक रहता है.' दृष्टिमें. 'ऐसी साधकपरिणतिकी अटपटी रीतिको ज्ञानी बराबर समझते हैं, दूसरोंको समझना कठिन होता है.' (श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)